इकाई 5 एमएनसी और टीएनसी की कार्य–प्रणाली

संरचना

5.0 उदेश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 एमएनसी और टीएनसी की अवधारणा और विशेषताएं

5.3 टीएनसी का विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्था

5.4 वैश्विक अर्थव्यवस्था में टीएनसी

5.5 घरेलू और मेजबान देशों के साथ टीएनसी के संबंध

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ ग्रंथ

5.8 अपनी प्रगति जांच करें अभ्यास के उत्तर

5.0 उदेश्य

इस इकाई में आप बहुराष्ट्रीय निगमों (एमएनसी) और अंतर्राष्ट्रीय निगमों (टीएनसी) के बारे में अध्ययन करेंगे। इस इकाई के माध्यम से आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे :

- एमएनसी और टीएनसी की अवधारणा और विशेषताओं को परिभाषित करें
- एमएनसी और टीएनसी के विकास का परीक्षण करें
- वैश्विक अर्थव्यवस्था में टीएनसी की भूमिका पर चर्चा करें, और
- घरेलू और मेजबान देश पर टीएनसी के प्रभाव का अध्ययन करें।

5.1 प्रस्तावना

बहुराष्ट्रीय निगमों (एमएनसी) या अंतर्राष्ट्रीय निगमों (TNCs) का उद्‌भव विश्व अर्थव्यवस्था में नई घटना नहीं है। हालांकि, 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत से वे वैश्विक अर्थव्यवस्था में अधिक महत्वपूर्ण और प्रमुख बन गए हैं। तेजी से बदलती तकनीक पर आधारित वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों और टीएनसी के विकास को प्रेरित किया है। वैश्वीकरण ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में क्रांति ला दी है, जिसमें आर्थिक (गैर–सरकारी) और राजनीतिक अभिकारकों (राज्य) के बीच का अंतर धुंधला हो गया है। वैश्विक अर्थव्यवस्था शक्तिशाली निजी अभिकारकों द्वारा संचालित है जिसमें वित्तीय निगम (बैंक और अन्य वित्तीय फर्म) के साथ–साथ गैर–वित्तीय निगम भी वैश्विक उत्पादन तंत्र (एमएनसीध्टीएनसी) में शामिल हैं। इन अंतर्राष्ट्रीय निगमों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में इतनी अधिक अभूतपूर्व प्रभाव वाली गतिविधियों को अंजाम दिया कि उन्हें आर्थिक गतिविधियों और बाजारों का एक प्रमुख स्तंभ माना जाने लगा। इसके साथ ही टीएनसी अपने आकार में इतने बड़े हो गए हैं कि वे दुनिया भर के लोगों के दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। मानव

जीवन में उनकी उपस्थिति और महत्व आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी गहन भूमिका से प्रकट होता है। वे दुनिया के कई राष्ट्र राज्यों से अधिक संसाधनों पर अधिकार के मामले में बेहद शक्तिशाली संस्थान बन गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, राष्ट्र राज्यों और उनके बीच संबंधों तथा किसी देश के घरेलू अर्थव्यवस्था में प्रभाव डालने की क्षमता के कारण ये निगम सत्ता का केंद्र बन गए हैं। संक्षेप में, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंव तकनीकी नवाचार की विस्तार की भूमिका के कारण एमएनसी और टीएनसी 20वीं और 21वीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था को परिभाषित कर रहे हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था में एमएनसी और टीएनसी का कितना वजन और प्रभाव है इसे समझने और अनुमान लगाने के लिए निम्नलिखित को देखें :

i. दुनिया की 100 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में 51 वैश्विक निगम और सिर्फ 49 देश हैं,

ii. शीर्ष 200 निगमों की संयुक्त बिक्री दुनिया की 9 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को छोड़कर सभी देशों की संयुक्त अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में बड़ी है और यही कारण है कि वे 182 देशों की संयुक्त अर्थव्यवस्था से आगे निकल गए हैं,

iii. शीर्ष 200 निगमों का दुनिया भर के ⅘ सबसे गरीब लोगों पर लगभग दोगुना आर्थिक दबदबा है।

5.2 एमएनसी और टीएनसी की अवधारणा और विशेषताएं

जैसे–जैसे वैश्वीकरण की प्रक्रिया तीव्र होती गई, बहुराष्ट्रीय निगम (एमएनसी), बहुराष्ट्रीय उपक्रम (एमएनई) और अंतर्राष्ट्रीय निगम (टीएनसी) जैसे बहुत सारे शब्द इसके लिए उपयोग में आए। हालांकि, कुछ विद्वान एमएनसी या टीएनसी शब्द के बीच अंतर नहीं करते हैं और आमतौर पर शब्दों का परस्पर उपयोग करते हैं, लेकिन कुछ ऐसे विद्वान भी हैं जो दोनों को अलग मानते हैं। जो इन दो शब्दों के बीच अंतर करते हैं, उनका तर्क है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां एक स्वामित्व वाली होती हैं, खासकर एक देश द्वारा, जो एक या दो देशों में संचालन करती हैं, जबकि टीएनसी कंपनियां कई देशों में संचालन करती हैं और ज्यादातर दो या अधिक देशों के सह–स्वामित्व पर आधारित होती हैं। हालांकि, यह अंतर धुंधला हो गया है क्योंकि अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियां बड़ी संख्या में सहायक कंपनियों के साथ विभिन्न देशों में संचालित होती हैं। इसलिए, इस शब्द का प्रयोग एक ही समय में परस्पर रूप से किया जाता है।

''एक कंपनी जिसका मुख्यालय एक देश (जो कि स्वदेश है) में है और जो कम–से–कम एक विदेशी (मेजबान) देश में काम करती है।'' उसे बहुराष्ट्रीय कंपनी के रूप में परिभाषित किया गया है। (विल्किंस, 1991)। टीएनसी को ''मूल उपक्रम और उसके विदेशी सहयोगियों से जुड़े या असंबद्ध उपक्रमों'' के रूप में परिभाषित किया गया है। मूल उपक्रम क्या है? इसका एक साधारण परिभाषा है – एक उपक्रम जो आमतौर पर अपने गृह देश के अलावा अन्य देशों में एक निश्चित इक्विटी पूंजी हिस्सेदारी के स्वामित्व द्वारा दूसरी संस्थाओं की संपत्तियों को नियंत्रित करता है। एक विदेशी सहयोगी क्या है? एक विदेशी सहयोगी एक निगमित या अनिगमित उपक्रम है जिसमें एक निवेशक, जो किसी दूसरे देश का निवासी है, एक ऐसी हिस्सेदारी का

मालिक है जो उस उपक्रम के प्रबंधन में एक स्थायी हित की अनुमति देता है (एक निगमति उपक्रम के लिए 10 प्रतिशत या उसके समकक्ष अनिगमित उपक्रम में इक्विटी हिस्सेदारी) (यूएनसीटीएडी, 2018)।

लाभ के उद्देश्य के आधार पर ये एमएनसी या टीएनसी एक से अधिक देशों में बिक्री का विस्तार करने, संसाधनों का अधिग्रहण करने, बिक्री और आपूर्ति के स्रोतों में विविधता लाने और प्रतिस्पर्धी जोखिम को कम करने के उद्देश्य के साथ अधिक–से–अधिक लाभ कमाना चाहती हैं।

एमएनसी क्या है और इसके गुण क्या हैं? एमएनसी – ''एक ऐसी फर्म जिसका संचालन सिर्फ एक देश तक सीमित नहीं होता, वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी है।" (हेस, 1972)। दूसरे शब्दों में कहें तो एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, बहुराष्ट्रीय उपक्रम, अंतर्राष्ट्रीय निगम जो एक कंपनी के तौर पर अपनी मूल संस्था के नियंत्रण में विदेशी निवेश और विदेशों में हिस्सेदारी खरीदती है, एमएनसी है। सबसे महत्वपूर्ण है, "एमएनसी/टीएनसी संस्थाएं विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) में संलग्न होती हैं और एक से अधिक देशों में मूल्यवर्धन गतिविधियों पर मालिकाना हक या नियंत्रण रखती हैं।" इसके आगे, रॉबर्ट गिलपिन प्रबंधन के पहलू पर प्रकाश डालते हैं। उनके लिए एमएनसी "एक ऐसी संस्था है जो दो या दो से अधिक देशों में आर्थिक इकाइयों की मालिक है और उनका प्रबंधन करती है। यह एक निगम द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश और कई देशों में आर्थिक इकाइयों (सेवाओं, खनन उद्योगों या विनिर्माण संयंत्रों) का स्वामित्व हासिल करने पर जोर देती है। इस तरह के प्रत्यक्ष निवेश (पोर्टफोलियो निवेश के विपरीत) का मतलब राष्ट्रीय विभिन्न देशों में प्रबंधकीय नियंत्रण का विस्तार है।" सरल और व्यापक शब्दों में, एमएनसी/टीएनसी ऐसी विदेशी फर्म है जो कई देशों में परिचालन शाखाओं और सहायक कंपनियों के माध्यम से संचालन करती है।

उपरोक्त विवरणों से बहुराष्ट्रीय निगमों की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हो सकती हैं : (i) पहला, यह राष्ट्रीय सीमाओं के पार कई मूल्यवर्धित गतिविधियों को पहुंच, आयोजन और समन्वय करता है। (ii) दूसरा, यह इन गतिविधियों से उत्पन्न मध्यवर्ती उत्पादों के लिए कम–से–कम सीमा पार कुछ बाजारों को स्थापित करता है। यह एमएनसी ही है जो सीमा पार उत्पादन और लेन–देन, दोनों में शामिल है। (iii) तीसरा, एमएनसी की प्रकृति अल्पाधिकारी हो जाती है जहां स्वामित्व, प्रबंधन, उत्पादन और विक्रय गतिविधियां कई देशों के क्षेत्राधिकार में फैली होती हैं। इसमें मुख्य कार्यालय एक देश में जबकि प्रबंधन से जुड़े लोगों, वित्तीय संपत्तियां और तकनीकी संसाधन के साथ–साथ सहायक कंपनियां दूसरे देश में स्थित होती हैं। (iv) चौथा, एमएनसी का इरादा दुनिया भर के बाजारों के लिए न्यूनतम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन करना होता है, खासकर उत्पादन सुविधाओं वाले सबसे अनुकूल स्थानों का अधिग्रहण कर या मेजबान सरकार द्वारा कर में छूट प्राप्त कर। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कामकाज का मुख्य आधार है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) उत्तर के लिए नीचे दिए गए खाली जगहों का प्रयोग करें

ii) उत्तर के सुझावों के लिए खंड के अंत में देखें

1. एमएनसी/टीएनसी को परिभाषित करें और उनकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 टीएनसी का विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्था

एमएनसी के विकास की एक लंबी कहानी है। उसने अंतर्राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया, तीव्र उदारीकरण, वैश्वीकरण और विशेष रूप से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) में परिवर्तन के कारण कई वर्षों में खुद को रूपांतरित किया है। परिणामस्वरूप, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पैमाने और दायरे दोनों बढ़ गए हैं। मोटे तौर पर, जिस तरह से कंपनियां दुनिया भर में अपने कारोबार का विस्तार और उसे एकीकृत कर रही हैं, उससे पता चलता है कि वे उद्देश्य के साथ बढ़ रही हैं।

टीएनसी के विश्व अर्थव्यवस्था के 'विकास का इंजन' बनने के प्रमुख कारण निम्नलिखित घटनाक्रमों में दिए गए हैं :

1. बाजार की ताकतों पर बढ़ता जोर और लगभग सभी विकासशील देशों में निजी क्षेत्र के लिए बढ़ती भूमिका।
2. तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन की प्रकृति एवं संगठन और ऐसी गतिविधि के स्थान को बदल रही हैं।
3. फर्मों और उद्योगों का वैश्वीकरण जिससे उत्पादन श्रृंखला राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाओं का विस्तार करती है।
4. विश्व अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा एकल क्षेत्र बनने के लिए सेवाओं का उदय।
5. क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण

आधुनिक एमएनसी या टीएनसी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दशकों में विकसित हुए। हालांकि, बहुराष्ट्रीय उपक्रमों की उत्पत्ति का पता अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के शुरुआती संकेतों से लगाया जा सकता है। कुछ लोगों का कहना है कि आधुनिक बहुराष्ट्रीय कंपनियों की जड़ों का पता सहस्राब्दी ई.पू. से लगाया जा सकता है, जब मध्ययुगीन यूरोप के प्राचीन असीरियन उपनिवेशवादियों, फोनीशियन, यूनानियों और रोमनों द्वारा संचालित व्यवसाय जुड़ी हुई थीं। वहीं, अन्य लोग पाते हैं कि ईस्ट इंडिया कंपनी (1600) और डच ईस्ट इंडिया कंपनी (1602) की कंपनियों में समानता देखने को मिलती है। रॉयल अफ्रीकन कंपनी (1660) को अफ्रीका से सोने और गुलामों के व्यापार के लिए बनाया गया था और हडसन बे कंपनी (1670) को फर का व्यापार करने और उत्तरी अमेरिका का उपनिवेशीकरण करने के लिए बनाया गया था। हालांकि, 18वीं शताब्दी के अंत तक और 19वीं सदी की शुरुआत तक औद्योगिक क्रांति से मिलता–जुलता और समकालीन स्थिति में निगमों का उदय नहीं हुआ था। उत्पादन

प्रक्रियाओं में परिवर्तन और तकनीकी विकास के कारण नई उत्पादन प्रक्रियाओं के उदय के परिणामस्वरूप वर्तमान टीएनसी की समान विशेषताओं वाले आधुनिक निगमों का उद्‌भव हुआ। हालांकि, यह केवल 20वीं शताब्दी की शुरुआत ही थी जब योग्य पेशेवरों द्वारा प्रबंधित और खासकर संयुक्त राज्य अमेरिका की कॉर्पोरेट अर्थव्यवस्था पर आधारित बड़े उपक्रम उभरे।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दो दशकों में यूएस टीएनसी आर्थिक गतिविधियों, विशेष रूप से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश पर हावी रही। अमेरिकी प्रत्यक्ष निवेश का मूल्य 1950 में 11.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 1984 तक लगभग 233.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। 1981 में दुनिया के एफडीआई में यूएस का हिस्सा 2/5 से अधिक था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एफडीआई की दिशा में भी परिवर्तन हुआ था। अमेरिकी निवेश लैटिन अमेरिका से कनाडा, पश्चिमी यूरोप और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गया। निवेश का बड़ा हिस्सा उन्नत विनिर्माण उद्योगों यानी उन्नत औद्योगिक क्षेत्रों (ऑटोमोबाइल, रसायन और इलेक्ट्रॉनिक्स) में चला गया। इस बीच 1970 के दशक के शुरुआत में में ब्राजील, भारत और पूर्व के वामपंथी देशों जैसे नव–औद्योगिकृत देशों (एनआईसी) में कुछ निगमों के साथ–साथ यूरोपीय और जापानी बहुराष्ट्रीय निगमों का भी उदय हुआ। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि तकनीकी उन्नति, राजनीतिक अनिश्चितताओं और विकसित एवं विकासशील देशों में व्यापार बाधाओं में नाटकीय वृद्धि के परिणामस्वरूप विदेशी सहायक या स्थानीय फर्मों के साथ संयुक्त उद्यम की स्थापना हुई। इससे 20वीं सदी के अंत तक कई देशों के बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा तेज हो गई। 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विलय एवं अधिग्रहण (एम ऐंड ए) विदेशी निवेश का पसंदीदा तरीका बन गया, जो विकसित दुनिया में एफडीआई के थोक और विकासशील दुनिया में शेयरों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट – 2002 के अनुसार, 1987 में विभिन्न देशों में विलय एवं अधिग्रहण (एम ऐंड ए) 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 1999 में 720 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। सीमा पार एम ऐंड ए के रूप में दुनिया में एफडीआई प्रवाह का अनुपात 1999 में 80 प्रतिशत तक पहुंच गया। वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकी एवं संचार में तेज प्रगति से प्रेरित विश्व अर्थव्यवस्था में विभिन्न परिवर्तनों के कारण टीएनसी की भूमिका आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक निहितार्थों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

आपको पता होना चाहिए कि विलय और अधिग्रहण (एम ऐंड ए) व्यावसायिक फर्मों की रणनीतिक प्रबंधन का हिस्सा है। एम ऐंड ए एक लेनदेन है जिसमें कंपनियों, अन्य व्यावसायिक संगठनों या उनकी परिचालन इकाइयों के स्वामित्व को अन्य संस्थाओं के साथ स्थानांतरित या सम्मिलित किया जाता है। एम ऐंड ए के साथ कंपनियां विकास करती हैं, उनका आकार घटता है या खत्म हो जाती हैं। एम ऐंड ए के कारण फर्मों के व्यवसाय की प्रकृति या प्रतिस्पर्धी स्थिति में भी परिवर्तन होता है।

सरल शब्दों में कहें तो विलय दो इकाइयों का एक इकाई में एकीकरण है, जबकि अधिग्रहण का मतलब है कि एक फर्म ने किसी अन्य इकाई के शेयर, इक्विटी हितों या परिसंपत्तियों का स्वामित्व ले लिया। वाणिज्यिक शब्दों में, दोनों प्रकार के लेनदेन में आमतौर पर एक इकाई के तहत संपत्ति और देनदारियों का समेकन होता है; इसलिए ''विलय'' और ''अधिग्रहण'' के बीच का अंतर धुंधला बना हुआ है।

विकासवादी प्रक्रिया में, विदेशी बाजारों से लाभ उठाने के लिए टीएनसी की वैश्विक रणनीतियों में भी परिवर्तन देखा गया हैः दुनिया के बाजारों के साथ जुड़ने के लिए पांच अलग–अलग साधन हैं :

1. निर्यात या स्थानीय फर्मों को लाइसेंस देकर बाजार की सेवा द्वारा प्रत्यक्ष निवेश नहीं।
2. ग्रीनफील्ड उद्यम द्वारा सीधे निवेश।
3. किसी स्थानीय फर्म का अधिग्रहण द्वारा सीधे निवेश।
4. स्थानीय फर्म के साथ विलय द्वारा सीधे निवेश।
5. स्थानीय फर्म के साथ रणनीतिक गठबंधन।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट i) उत्तर के लिए नीचे दिए गए खाली जगहों का प्रयोग करें

ii) उत्तर के सुझावों के लिए खंड के अंत में देखें

1. वैश्विक अर्थव्यवस्था में विलय एवं अधिग्रहण (एम ऐंड ए) की घटना की व्याख्या करें

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 वैश्विक अर्थव्यवस्था में टीएनसी

पिछले कुछ वर्षों में टीएनसी की भूमिका विश्व अर्थव्यवस्था में कहीं अधिक उलझा हुआ और जटिल हो गई है। उनकी व्यापक भूमिका न केवल पैमाने और पहुंच में स्पष्ट हैं, बल्कि उनकी गतिविधियों की प्रकृति भी एकरूपता है।

टीएनसी की संख्या बढ़ रही हैः 1990 के दशक की शुरुआत में विश्व में 1,70,000 विदेशी सहयोगियों के साथ अनुमानित 37,000 टीएनसी थे। इनमें से 33,500 विकसित देशों में स्थित मूल निगम (पैरेंट कॉरपोरेशन) थे। 15 वर्षों की अवधि में 7,70,000 से अधिक विदेशी सहयोगियों के साथ बढ़कर टीएनसी की संख्या 77,000 हो गई। इसके अलावा, 1990 के दशक की शुरुआत में 90 प्रतिशत से अधिक टीएनसी के मुख्यालय विकसित देशों में थे और 01 प्रतिशत से कम टीएनसी की उत्पत्ति मध्य और पूर्वी यूरोप में हुई। सभी मूल निगमों का लगभग 08 प्रतिशत हिस्सा विकासशील देशों में है। वर्ष 2005 के आसपास 15 वर्षों की अवधि में विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के मूल निगम सभी टीएनसी के एक चौथाई थे और उनमें से पांच दुनिया के शीर्ष 100 स्थान में शामिल थे।

टीएनसी का राजस्व आधार मजबूत और बड़ा हैः राजस्व के मूल्य के अनुसार, 2016–17 में राज्य के स्वामित्व वाले उपक्रमों सहित शीर्ष 10 सबसे बड़े निगम थेः 485 बिलियन अमेरिकी डॉलर राजस्व वाला वॉलमार्ट (यूएस), स्टेट ग्रिड (चीन) 315 बिलियन अमेरिकी डॉलर, सिनोपेक समूह (चीन) 267 बिलियन अमेरिकी डॉलर, चाइना नेशनल पेट्रोलियम (चीन) 262 बिलियन अमेरिकी डॉलर, टोयोटा मोटर (जापान) 254 बिलियन अमेरिकी डॉलर, वॉक्सवैगन (जर्मनी) 240 बिलियन अमेरिकी डॉलर, रॉयल डच शेल (नीदरलैंड) 240 बिलियन अमेरिकी डॉलर, बर्कशायर हैथवे (यूएस) 223 बिलियन अमेरिकी डॉलर, ऐप्पल (यूएस) 215 बिलियन अमेरिकी डॉलर और एक्सॉन मोबाइल (यूएस) 205 बिलियन अमेरिकी डॉलर राजस्व। फॉर्च्यून ग्लोबल 500 कंपनियों के अनुसार, दुनिया की 500 सबसे बड़ी कंपनियों ने 2016 में राजस्व में 27.7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर और मुनाफे में 1.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की बढ़ोत्तरी की। इन कंपनियों ने वर्ष 2016–17 में दुनिया भर में 67 मिलियन लोगों को रोजगार दिया, जिसमें 34 देशों के लोग शामिल थे।

बाजार पूंजीकरण के अनुसार, वर्ष 2016 में विश्व के शीर्ष 10 निगम अमेरिका के थे। हालांकि, हांगकांग और चीन की चाइना मोबाइल लिमिटेड, आईसीबीसी लिमिटेड और पेट्रो चाइना दुनिया की शीर्ष 20 कंपनियों में शामिल हैं, विशेष रूप से दूरसंचार, वित्तीय और तेल एवं गैस के क्षेत्र में।

टीएनसी और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाः विश्व अर्थव्यवस्था में टीएनसी के प्रमुख योगदानों में से एक अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन नेटवर्क, आपूर्ति श्रृंखला या वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं का निर्माण है जिसके तहत एक एकल उत्पाद का दुनिया के विभिन्न स्थानों पर उत्पादन किया जाता है। उदाहरण के लिए, ऐप्पल आईफोन मूलभूत परिवर्तन को दिखाता है जो उत्पादन प्रक्रिया के बारे में टीएनसी द्वारा समन्वित वैश्विक उत्पादन नेटवर्क के कारण उत्पादन प्रक्रिया के बारे में बताता है। वर्ष 2014 तक आईफोन 6 के पुर्जे 31 देशों में 785 आपूर्तिकर्ताओं द्वारा उत्पादित किए गए थे। उत्पाद को अमेरिका में डिजाइन किया गया और चीन में जोड़ा गया। इनमें से 60 आपूर्तिकर्ता यूएस के और 349 चीन के थे। वैश्विक उत्पादन में इस तरह के अंतर्संबंध को मान्यता देते हुए, यूएनसीटीएडी ने कहा : "आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) से चिह्नित किया जाता है, जिसमें मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार विभाजित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बिखरी हुई उत्पादन प्रक्रियाएं में होता है। जीवीसी आमतौर पर संबद्ध नेटवर्क, संविदात्मक साझेदारों और अलग–अलग आपूर्तिकर्ताओं के नेटवर्क के अंतर्गत विभिन्न देशों के साथ आयात–निर्यात के साथ टीएनसी द्वारा समन्वित होता है। टीएनसी समन्वित जीवीसी का वैश्विक व्यापार में लगभग 80ः हिस्सा है।"

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उन्नत और विस्तारित उपयोग ने टीएनसी के अंतर्राष्ट्रीय संचालन को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है और मेजबान देशों में उसके विदेशी सहयोगियों के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन को भी प्रभावित किया है। यूएनसीटीएडी इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2017 के अनुसार, 2010 से 2015 के बीच यूएनसीटीएडी की शीर्ष 100 टीएनसी की सूची में तकनीकी कंपनियों की संख्या दोगुनी से अधिक हुई है। इनकी संपत्ति में 65 प्रतिशत वृद्धि हुई और उनके परिचालन राजस्व और कर्मचारियों में लगभग 30 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। सभी उद्योगों के वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में ई–कॉमर्स और डिजिटल कंटेंट फर्म सहित डिजिटल

तकनीक को अपनाने का भी अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। डिजिटल टीएनसी का विदेशों में कुल बिक्री का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि उसकी संपत्ति का केवल 40 प्रतिशत हिस्सा उसके घरेलू देश से बाहर है।

विकासशील देशों की टीएनसी युवा हैः वर्ष 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) की प्रमुख विशेषताओं में से एक विकासशील देशों की टीएनसी की बढ़ती प्रमुखता है, खासकर राज्य के स्वामित्व वाली टीएनसी की। 2008–2009 के जीएफसी के दौरान कई टीएनसी को झटका लगा था, जबकि कई विकसित और उभरते एवं विकासशील देशों की राज्य स्वामित्व वाली टीएनसी (एसओ–टीएनसी) ने विश्व अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाई। वर्ष 2012 में विकसित अर्थव्यवस्थाओं को एफडीआई में सबसे बड़ी गिरावट का सामना करना पड़ा जो वैश्विक प्रवाह का सिर्फ 42 प्रतिशत था, जबकि विकासशील अर्थव्यवस्थाओं ने वैश्विक एफडीआई प्रवाह का 52 प्रतिशत अवशोषित किया। विकासशील देशों ने भी वैश्विक एफडीआई का लगभग एक तिहाई प्रवाह किया। यूएनसीटीएडी की 2017 की एक रिपोर्ट के अनुमान के अनुसार, 86,000 से अधिक विदेशी सहयोगियों वाले लगभग 1,500 एसओ–टीएनसी हैं, जो दुनिया भर में काम कर रहे हैं और ये कुल टीएनसी का लगभग 1.5 प्रतिशत और सभी सहयोगियों के 10 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका प्रभाव इस तथ्य से स्पष्ट है कि शीर्ष 100 गैर–वित्तीय टीएनसी में से 15 राज्य के स्वामित्व वाले टीएनसी थे। इन 100 में से शीर्ष 41 टीएनसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से चीन, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका और रूस में स्थित थे।

राज्य के स्वामित्व वाली टीएनसी वैश्विक अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता है : कुल संपत्ति के मामले में जर्मनी, इटली और फ्रांस से गैर–वित्तीय एसओ–टीएनसी 2016 में हावी थे। 432 बिलियन अमेरिकी डॉलर की कुल संपत्ति के साथ जर्मनी के वॉक्सवैगन समूह को पहला रैंक हासिल है, इसके बाद इटली के एनेल स्पा और एनी स्पा (क्रमशः 164 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 131 बिलियन अमेरिकी डॉलर की संपत्ति), जर्मनी के ड्यूश टेलीकॉम एजी (156 बिलियन अमेरिकी डॉलर), ईडीएफ एसए (296 बिलियन अमेरिकी डॉलर) और एंजी (167 बिलियन अमेरिकी डॉलर) हैं। वर्ष 2016 में चीन और जापान क्रमशः 179 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 187 बिलियन अमेरिकी डॉलर की कुल संपत्ति के साथ शीर्ष दस एसओ–टीएनसी में 7वें और 10वें स्थान पर थे।

जहां तक वित्तीय एसओ–टीएनसी की कुल संपत्ति का सवाल है, 2016 में चीनी कंपनियों का प्रभुत्व स्पष्ट था। वर्ष 2016 में जापान पोस्ट होल्डिंग कंपनी लिमिटेड ने कुल रैंकिंग में 4वां स्थान हासिल किया, जिसकी कुल संपत्ति 2,592 बिलियन अमेरिकी डॉलर थी और यूनाइटेड किंग्डम (यूके) के रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड ग्रुप पीएलसी ने 982.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर की कुल संपत्ति के साथ 7वां स्थान प्राप्त किया।

टीएनसी और एफडीआई : टीएनसी माल और सेवाओं में त्वरित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, एफडीआई और तकनीकी ज्ञान के हस्तांतरण के माध्यम से विश्व अर्थव्यवस्था के एकीकरण की प्रक्रिया के केंद्र में है। इस प्रकार टीएनसी विश्व अर्थव्यवस्था के गहन एकीकरण और खुलेपन को बढ़ावा देता है। इस तरह की भूमिका के कई संकेतकों में से एक बढ़ती एफडीआई के माध्यम से आर्थिक एकीकरण है। वर्ष 2010 में वैश्विक एफडीआई का मूल्य 21,288.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक था और 8,90,000 बिलियन विदेशी सहयोगियों के साथ 100,000 से अधिक टीएनसी की है। एफडीआई

विभिन्न देशों में आर्थिक गतिविधियों का प्रसार, सभी देशों में विकास को बढ़ावा और व्यापार करने के लिए अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण को सक्षम कर वैश्विक अर्थव्यवस्था में अधिक–से–अधिक आर्थिक दक्षता में योगदान देता है। इस प्रक्रिया में वह विशेष रूप से मेजबान देशों में रोजगार का सृजन करता है। हालांकि, इस तरह के एफडीआई पर मेजबान देशों की निर्भरता में वृद्धि, तेज प्रतिस्पर्धा, स्वदेश के लिए मुनाफे का दोहन और संसाधनों पर नियंत्रण जैसे इसके प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ते हैं। कभी–कभी टीएनसी मेजबान देश के मुकाबले अपने देश की हितों को प्राथमिकता देते हैं। उदाहरण के लिए, अपने हितों को साधने में विफल रहने पर गृह देश सहायक कंपनियों के माध्यम से आर्थिक और राजनीतिक रूप से मेजबान देश को अलग कर सकता है। इसके विपरीत, मेजबान देश किसी सहायक की संपत्ति को भी जब्त कर सकता है और किसी भी नकारात्मक निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए गृह देश पर दबाव डाल सकता है। मेजबान देशों के विदेशी व्यापार और मौद्रिक नीतियों में परिवर्तन से सहायक कंपनियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। गृहयुद्ध या घरेलू हिंसा टीएनसी के हितों को खतरे में डाल सकती है जिसके कारण मेजबान देश में इसका संचालन वापस या निलंबित हो सकता है।

टीएनसी और विकासशील दुनिया में उसकी विकासात्मक भूमिकाः टीएनसी ने एकीकृत अंतर्राष्ट्रीय तंत्र को जन्म दिया है, जिसके परिणामस्वरूप मूल्य श्रृंखला गतिविधियों का विखंडन और विभिन्न देशों में उसका फैलाव हुआ है। इससे पहले, ऐसी गतिविधियों को एक फर्म के संरक्षण में समन्वित किया गया था और मुख्य रूप से उत्पादन और संचालन पर केंद्रित किया गया था। हालांकि, वैश्विक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के साथ इस तरह की गतिविधियां स्वतंत्र या कहें शिथिल निर्भर संस्थाओं के बीच समन्वित होती रही हैं। इसलिए, टीएनसी भी तेजी से संस्थानों को आकार दे रहे हैं और स्थानीय नागरिक समाज साझेदारों के माध्यम से इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण कर रहे हैं जो आर्थिक गतिविधियों के लिए अनुकूल हैं और स्थानीय उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षा, प्रशिक्षण और आपूर्तिकर्ता संपर्क–सूत्र प्रदान कर टीएनसी स्थानीय कंपनियों को संचालन के पैमाने और दायरे का विस्तार करने के साथ–साथ मानव संसाधन को उन्नत करने में सक्षम बनाती है। इस प्रकार, टीएनसी की भागीदारी उन देशों में आर्थिक गतिविधि के दायरे के विस्तार की कुछ कठिनाइयों को दूर करने में मदद कर सकती है जहां सामाजिक सामंजस्य कम और शिक्षा का स्तर पर्याप्त नहीं है। सार्वजनिक–निजी साझेदारी के माध्यम से टीएनसी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक और उद्योग एवं फर्म स्तर के स्व–नियमन की स्थापना में मेजबान सरकार की मदद करता है। टीएनसी सार्वजनिक–निजी भागीदारी के माध्यम से परस्परिक लाभ के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा या बुनियादी ढांचा जैसी सार्वजनिक सेवाओं को उपलब्ध कराने में शामिल है।

वैश्विक शोध एवं विकास (आर ऐंड डी) : वैश्विक शोध एवं विकास (आर ऐंड डी) में टीएनसी बड़ी भूमिका निभा रहा है, खासकर विकासशील और निम्न विकासशील देशों में। टीएनसी अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्त का स्रोत और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं। प्रौद्योगिकियों के इस तरह के हस्तांतरण के लिए मेजबान देशों की ग्राह्य क्षमता बढ़ाने के लिए टीएनसी भी विकासशील देशों को वैश्विक आपूर्ति एवं वितरण श्रृंखला और बाहरी बाजारों तक उनकी पहुंच को सुविधाजनक बनाने के उनके आर ऐंड डी व्यावसायीकरण प्रणाली के निर्माण में मदद करते हैं। वैश्विक आर ऐंड डी गतिविधियों में टीएनसी की एक बड़ी हिस्सेदारी है। वर्ष 2002 में दुनिया की

शीर्ष 700 कंपनियों ने आर ऐंड डी पर 311 बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च किए। वर्ष 1993 और 2002 के बीच दुनिया भर में विदेशी सहयोगियों का अनुसंधान एवं विकास व्यय अनुमानित 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 67 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। वर्ष 1996 से 2002 के बीच विकासशील देशों में आर ऐंड डी में विदेशी सहयोगियों की हिस्सेदारी 2 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत हो गई। 2000 के दशक की शुरुआत से सबसे महत्पूर्ण बात चीन, भारत, ब्राजील और रूस सहित कम लागत पर उपलब्ध असाधारण प्रतिभा एवं प्रौद्योगिकी और भविष्य के बाजार क्षमता वाले उभरते बाजारों या देशों में टीएनसी द्वारा आर एंड डी संसाधनों का स्थानांतरण है। वर्ष 2000 और 2015 के बीच उभरते देशों में एमएनसी आर ऐंड डी केंद्रों की संख्या पांच कारक से बढ़ी है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट i) उत्तर के लिए नीचे दिए गए खाली जगहों का प्रयोग करें

ii) उत्तर के सुझावों के लिए खंड के अंत में देखें

1. वैश्विक मूल्य श्रृंखला के विचार और महत्व का संक्षेप में वर्णन करें
2. वैश्विक अर्थव्यवस्था में एमएनसी/टीएनसी के विकास को कौन–से कारक स्पष्ट करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 घरेलू और मेजबान देशों के साथ टीएनसी के संबंध

घरेलू और मेजबान देशों, दोनों के साथ टीएनसी का संबंध जटिल है। घरेलू और मेजबान देश दोनों के लिए टीएनसी के सकारात्मक और नकारात्मक निहितार्थ हो सकते हैं। सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं : (i) टीएनसी विशेष रूप से मेजबान देशों में राजस्व और रोजगार उत्पन्न कर सकते हैं, जो गरीबी में कमी और बेरोजगारी दूर करने में मदद कर सकता है। (ii) वैश्वीकरण और नव–उदारवाद के संदर्भ में टीएनसी को मेजबान देश में निर्यात बढ़ाने और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के माध्यम से आर्थिक विकास के प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण माना जाता है। (iii) विकसित देशों के कई ऐसे राष्ट्रीय कानून और अंतर्राष्ट्रीय समझौते हैं जो टीएनसी के कार्यों का नियमन करते हैं। टीएनसी पर्यावरण और श्रम स्थिति सहित मानक नियमों और कार्यों के आधार पर आर्थिक गतिविधियों के संचालन के लिए पारदर्शी ढांचे के निर्माण की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। (iv) विकसित देशों में सरकारें सार्थक आर ऐंड डी के लिए निहायत ही कम धनराशि और क्षमता रखती हैं। तकनीकी दक्षता और तकनीकी परिवर्तन द्वारा टीएनसी सहयोगियों द्वारा की गईं अनुसंधान और विकास गतिविधियों के माध्यम से आर ऐंड डी संबंधित एफडीआई आर्थिक विकास को सीधे प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह 'प्रतिस्पर्धात्मक लाभ' हासिल करने वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं

को उत्कृष्ट क्षेत्रों में बढ़ावा देता है। इसके अलावा, आर ऐंड डी मेजबान देश में रोजगार सृजन में योगदान देता है। हालांकि, अनुसंधान और विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मेजबान देशों के दुर्लभ स्थानीय आर ऐंड को स्थानीय फर्मों और अनुसंधान संस्थानों से वंचित कर सकता है।

इसका नकारात्मक पक्ष यह है कि विकासशील देशों में एमएनसी के कामकाज को लेकर को विद्वानों को बहुत शिकायत है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकृतियां पैदा की हैं। (i) कहा जाता है कि घरेलू और मेजबान देशों, दोनों अपने–अपने राष्ट्रीय हितों को साधने के लिए टीएनसी का इस्तेमाल कर सकती हैं। घरेलू देश लॉबिंग, विज्ञापन और अन्य तरीकों से विदेश नीति और अन्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए टीएनसी का उपयोग और जोड़–तोड़ करते हैं। इसके विपरीत, मेजबान देश भी अपने देश की सहायक कंपनियों पर किसी नकारात्मक निर्णय को शामिल करने के लिए लिए जब्ती के माध्यम से दबाव डाल सकते हैं। (ii) कहा जाता है कि एमएनसी और टीएनसी स्वतंत्र और निष्पक्ष व्यापार की वैश्विक प्रणाली का नेतृत्व नहीं करते हैं। वैश्विक व्यापार का लगभग एक तिहाई आज वास्तव में इंट्रा–फर्म व्यापार है। (iii) विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की कल्पना घरेलू देश में श्रम के महत्वपूर्ण क्षेत्रों द्वारा अपने हितों के लिए खतरे के रूप में की जा सकती है। इसी तरह, मेजबान देश बहुराष्ट्रीय कंपनियों को उनके आर्थिक, राजनीतिक और अन्य हितों के लिए हानिकारक मानकर अपने अर्थव्यवस्था में प्रवेश रोक लगा सकता हैं। (iv) जैसा कि पहले कहा गया है, दुनिया की 100 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में 51 निगम हैं, जबकि केवल 49 देश हैं। वॉलमार्ट इजराइल, पोलैंड और ग्रीस जैसे 161 देशों की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं से बड़ा है। मित्सुबिशी इंडोनेशिया से बड़ी है। जनरल मोटर्स डेनमार्क से बड़ी है। फोर्ड दक्षिण अफ्रीका से बड़ी है। टोयोटा नॉर्वे से बड़ी है। ये विशालता सिर्फ उनकी पूंजी आधार और कमाई के लिहाज से नहीं है, आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पास विश्व के अधिकांश देशों की तुलना में कहीं अधिक तकनीक है। (v) टीएनसी का विश्वव्यापी प्रसार चिंता का विषय है। वैश्विक असमानता और गरीबी की गहरी खाई के लिए उन्हें अधिक जिम्मेदार माना जाता है। शीर्ष 200 निगमों का दुनिया के ⅘ सबसे गरीब लोगों पर लगभग दोगुना आर्थिक दबदबा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप दुनिया के अमीरों के पास धन का भारी संग्रह हुआ है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया की जीडीपी का लगभग 85 प्रतिशत सबसे अमीर 1/5 लोगों द्वारा नियंत्रित किया जाता है, केवल 15 प्रतिशत जीडीपी सबसे गरीब 4/5 द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इसलिए, दुनिया के सबसे गरीब 4.5 बिलियन लोग सिर्फ 3.9 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर वाली आर्थिक गतिविधि के लिए जिम्मेदार हैं, जो कि शीर्ष 200 कंपनियों की 7.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर संयुक्त राजस्व के आधा से कुछ ही अधिक है। (vi) टीएनसी नौकरी उत्पन्न नहीं करती है, वह वास्तव में मौजूदा रोजगार को नष्ट करती है। विश्व की शीर्ष 200 कंपनियों में 20 मिलियन से भी कम लोग कार्यरत हैं, जबकि यह अनुमान है कि 2.6 बिलियन लोग वैश्विक कार्यबल में शामिल हैं। इस प्रकार एमएनसी द्वारा उत्पन्न की गईं नौकरियां विश्वव्यापी रोजगार का एक प्रतिशत भी नहीं है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट i) उत्तर के लिए नीचे दिए गए खाली जगहों का प्रयोग करें

ii) उत्तर के सुझावों के लिए खंड के अंत में देखें

1. एमएनसी/टीएनसी के कार्यों के नकारात्मक प्रभाव और निहितार्थ पर एक नोट लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

पिछले कुछ दशकों में टीएनसी वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। पिछले कुछ वर्षों में विश्व अर्थव्यवस्था में हुए परिवर्तनों ने टीएनसी की प्रकृति और कार्य–प्रणाली को बदल दिया है। शुरुआती वर्षों में टीएनसी में मूल रूप से विकसित देशों की निजी कंपनियों का प्रभुत्व था। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में वैश्विक अर्थव्यवस्था विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में निगमों के तेज विकास का गवाह बनी है, जो पारंपरिक निगमों को तेज गति से सहयोग और समृद्ध कर रही है। इसके साथ ही, प्रौद्योगिकी में उन्नति और वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बदलाव के साथ टीएनसी की भूमिका का भी विस्तार हुआ है। एफडीआई प्रवाह का एक प्रमुख खिलाड़ी होने के कारण टीएनसी अब सेवाओं की डिलीवरी (स्वास्थ्य, शिक्षा आदि) जैसी कई अन्य गैर–आर्थिक गतिविधियों में शामिल है। 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव विकासशील देशों की एसओ–टीएनसी का उभार है। इन एसओ–टीएनसी की भूमिका, खासकर चीन जैसी उभरती अर्थव्यवस्था की, वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपरिहार्य हो गया है और भविष्य में वैश्विक अर्थव्यवस्था में और परिवर्तन हो सकते हैं।

5.7 संदर्भ ग्रंथ

डन्निंग जॉन एच. एण्ड एस. एम. लुण्डान, (2008), *मल्टीनेशनल इंटरप्राइजेज एण्ड दि ग्लोबल इकोनॉमी,* चेल्तनहाम : ऐडवर्ड ऐल्गर पब्लिशिंग।

फॉर्च्यून ग्लोबल 500, http://fortune.com/global500/

गिलपिन, रॉबर्ट, (1987), दि पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, न्यू जर्सी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

हायेस, रिचर्ड डी., क्रिस्टोफर एम., कोर्थ, मनुचेर रॉडिआनी, (1972), *इंटरनेशनल बिजनेस : ऐन इंट्रोडक्शन टू दि वर्ल्ड ऑफ दि मल्टिनेशनल फर्म,* न्यू जर्सी, ईगलवूड प्रेस।

लाल्ल, संजया (2002), *इंप्लीकेशंस ऑफ क्रॉस–बॉर्डर मर्जर एण्ड एक्यूजिशनंस बाय टीएनसीज इन डेवलपिंग कंटरीज : ए बिगनर–ज गाइड.* वर्किंग पेपर नम्बर 88, क्यूईएच वर्किंग पेपर सिरीज – क्यूईएचडब्ल्यूपीएस 88, जून। https://pdfs.semanticscholar.org/c185/183060ca96c3803bba65d65ab665cfd0c56 .pdf

लुण्डान, सरिआना एम. एण्ड हफीज़ मिर्जा, (2010), ''टीएनसी इवॉल्यूशन एण्ड दि इमर्जिंग इन्वेस्टमेंट–डेवलपमेंट पैराडाइम'', *ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस,* वॉल्यूम–19, नम्बर–2, अगस्त, पृ.31–45

मॉडेल्स्की, जॉर्ज, (1979), ''ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस एण्ड दि वर्ल्ड ऑर्डर इन जॉर्ज मॉडेल्स्की, ऐडिटेड, *ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस एण्ड वर्ल्ड ऑर्डर,* चिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस।

फिलिप्स, निकोला, (2017), ''ग्लोबल पॉलिटिकल इकोनॉमी'', इन जॉन बेलिस, स्टीव स्मिथ, पैट्रिसिया ओवेन्स, ऐडिटर्स, *दि ग्लोबलाइजेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स : ऐन इंट्रोडक्शन टू इंटरनेशनल रिलेशंस,* ऑक्सफोर्ड : ओयूपी।

यूएनसीटीएडी, (2007), *दि यूनिवर्स ऑफ दि लार्जेस्ट ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस,* न्यू यॉर्क : यूनाइटेड नेशंस पब्लिकेशंस. http://unctad.org/en/Docs/iteiia20072en.pdf

यूएनसीटीएडी, (2013), ''ग्लोबल वैल्यू चेन्स : इन्वेस्टमेंट एण्ड ट्रेड फॉर डेवलपमेंट'' इन *वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2013.* http://unctad.org/en/PublicationsLibrary/wir2013en.pdf,

यूएनसीटीएडी, (2017), ''इन्वेस्टमेंट एण्ड दि डिजिटल इकोनॉमी'', *वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2017,*http://unctad.org/en/PublicationsLibrary/wir2017_en.pdf

विलकिंस, मीरा, (1991), ''यूरोपीयन एण्ड नॉर्थ अमेरिकन मल्टिनेशनल्स, 1870–1914 : कम्पैरिजन एण्ड कॉन्ट्रास्ट'', इन मीरा विल्किंस, ऐडिटेड, *दि ग्रोथ ऑफ मल्टिनेशनल्स,* मस्साच्यूसेट्टस : ऐडवर्ड एल्गार पब्लिशिंग।

विलकिंस, मीरा, (1991), ''मॉर्डन यूरोपीयन इकोनॉमिक हिस्ट्री एण्ड लरत मल्टिनेशनल्स'', इन मीरा विल्किंस, ऐडिटेड, *दि ग्रोथ ऑफ मल्टिनेशनल्स,* मस्साच्यूसेट्टस : ऐडवर्ड एल्गार पब्लिशिंग।

विलकिंस, मीरा, (2005), ''मल्टिनेशनल इंटरप्राइज टू 1930 : डिस्कन्टीन्यूटीज एण्ड कंटीन्यूटीज'', इन ऐल्फर्ड डी. चैन्डलर जूनियर एण्ड ब्रूस मज़लिश ऐडिटर्स, *लेवियाथंस : मल्टिनेशनल कॉर्पोरेशंस एण्ड दि न्यू ग्लोबल हिस्ट्री,* न्यू यॉर्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

5.8 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सम्मिलित होना चाहिए।

- एमएनसी की परिभाषा और उनकी मुख्य विशेषताएं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सम्मिलित होना चाहिए।

- वैश्विक अर्थव्यवस्था में विलय और अधिग्रहण (एम एंड ए) की घटना क्यों प्रमुख हो गई है?

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सम्मिलित होना चाहिए।

- वैश्विक मूल्य श्रृंखला का विचार और महत्व।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित सम्मिलित होना चाहिए।

- एमएनसी के काम के नकारात्मक प्रभाव और निहितार्थ को कवर करें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY